रहस्यवाद की परिभाषाएँ

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल — "साधना के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, काव्य (भावना) के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है।

2. गंगा प्रसाद पांडेय — "रहस्यवाद के तत्व की वह दिव्य अनुभूति है जिसके भावावेश में प्राणी अपने ससीम और पार्थिव अस्तित्व से उस असीम एवं सर्वांगीण महाअस्तित्व के साथ एकात्मकता का अनुभव करने लगता है।

3. पंडित परशुराम चतुर्वेदी — रहस्यवाद शब्द काव्य की एक धारा विशेष को सूचित करता है। वह प्रधानतम उसमें लक्षित होनेवाली उस अभिव्यक्ति की ओर संकेत करता है जो विश्वात्मक सत्ता की प्रत्यक्ष गम्भीर एवं तीव्र अनुभूति से

साथ सम्बन्ध रखती है।

डॉ० राम कुमार वर्मा —— रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर निहित प्रवृति का प्रकाशन है जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शांत और निश्छल सम्बन्ध जोड़ना चाहता है। और यह सम्बन्ध यहाँ तक बढ़ जाता है कि दोनों में अंतर नहीं रह जाता।

5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी —— सीमाहीन अर्थात परम प्रेममय भगवान के साथ निरंतर प्रेम के लिए ही प्रेरणा रहस्यवादी कविता का केन्द्र बिन्दु है।

6. जयशंकर प्रसाद —— अपरोक्ष अथवा स्वानुभूति समरसता तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के द्वारा अहम् का इदम् से समन्वय का सुन्दर प्रयत्न ही रहस्यवाद है।

7. बाबू गुलाब राय —— प्रकृति में मानवी भावों का आरोप कर जड़ चेतन के एकीकरण की प्रवृति जब कुछ अधिक वास्तविक धारणा कर अनुभूति मय बौद्धिक सम्बन्ध की ओर अग्रसर होती है तभी रहस्यवाद का जन्म होता है।

8. नन्द दुलारे बाजपेयी —— किसी परोक्ष सत्ता की अनुभूति और उससे मिलन की भावना रहस्यवाद है।

9. महादेवी वर्मा —— रहस्यानुभूति में बुद्धि शेष ही हृदय प्रेम हो जाता है।

10. डॉ त्रिगुणायत —— जब साधक भावना के सहारे आध्यात्मिक सत्ता की रहस्यमयी अनुभूतियों को वाणी के द्वारा शब्दमय चित्रों में सजाकर रखने लगता है तभी साहित्य में चित्रों में सजाकर रखने लगता है। तभी साहित्य में सृष्टि होती है।

हिन्दी साहित्य में प्रमुख रहस्यवादी कवि

हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद कबीर दादू के समय से मिलता है।
डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त ने संतो के रहस्यवाद के स्रोतों का अभिव्यंजन करते हुए लिखा है — "हिन्दी के संतों में भारतीय संतों द्वारा रहस्यवाद का प्रवर्तन मुख्यतः दो धार्मिक सम्प्रदायों के योग से हुआ। एक था नाथपंथी सम्प्रदाय और दूसरा वैष्णव भक्ति सम्प्रदाय"॥

हिन्दी के प्रमुख रहस्यवादी कवियों में प्रायः कबीर, जायसी, प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी वर्मा का नाम लिया जाता है।

① **कबीर** ⟶ कबीर की रहस्य भावना जन्मजात है। जो आस्था मूलक है। अतः इसे रहस्य साधना की प्रथम स्थिति से गुजरने की आवश्यकता नहीं पड़ी। कबीरदास जी ने ज्ञान मार्गी होते हुए भी प्रेम तत्व को सर्वथा प्रमुखता प्रदान की है। वे स्पष्ट कहते हैं —

"कबीर हरति तुम समाना कुबुद्धियों से
जो हँसि बोला और हँसा तो मोल कंचन दिया"॥

यहाँ विरह की अनवरतता भी है — "बाल्हा आव हमारे गेह रे
तुम बिन दुखिया देह रे"॥

② **जायसी** —— जायसी के रहस्यवाद का आधार सूफी साधना पर होती है। उनका मूल तत्व प्रेम की पीर है। जायसी ने इश्क मजाजी (लौकिक प्रेम) इश्क हकीकी (आध्यात्मिक प्रेम) का प्रथम सोपान माना है।

यही कारण है कि उन्होंने अपने रहस्यवाद को अभिव्यक्त प्रदान करने के लिए प्रतीकों और पद्मावती के कथानक को अपनाया है।

और लौकिक प्रेम के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम की मनोरम अभिव्यंजना की है। पद्मावती के रूप में जायसी का वह अलौकिक सौन्दर्य से भरित है। विश्व के सौन्दर्य का आदि स्रोत उसी ब्रह्म का सौन्दर्य है। विश्व के कण-कण में उसी ब्रह्म की दिव्य ज्योति प्रतिबिम्बित है।

" रवि शशि नखत दीप की ओहि ज्योति
रतन पदारथ मानिक मोती
जँह तँह बिहँसि स्वभावहि हँसी
तँह तँह छिटकी ज्योति पर हँसी ॥

आधुनिक काल के रहस्यवादी कवि —

जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जिज्ञासा, प्रणय और मिलन इन तीन अवस्थाओं का वर्णन कवियों ने अपनी-अपनी अनुभूति के आधार पर विभिन्न प्रकार से किया है। इन्हीं अवस्थाओं के आधार को लेकर विद्वानों ने इसके कई भेद किये हैं। श्री गुलाब राय ने पाँच प्रकार के रहस्यवाद की चर्चा की है।

रहस्यवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ →

हिन्दी काव्य के रहस्यवाद में हमें सात प्रकार की प्रमुख प्रवृत्तियाँ होती हैं —

(1) प्रेम तत्व की व्यंजना —

रहस्यवाद में प्रेम तत्व का व्यंजना है। रहस्यवाद की आत्मा अनन्त शक्ति के प्रति प्रेम में अनुरक्त होकर सदैव वह उससे मिलने को व्याकुल रहती है। रहस्यवादी कवि आत्मा को पत्नी एवं परमात्मा को प्रियतम का सांदृश्य देकर आत्मा के प्रणय निवेदन की मनोरम व्यंजना करता आया है। प्रियतम परमात्मा के

आत्मा की छटपटाहट और इसका साक्षात्कार तो आत्मा के उल्लास एवं उन्माद को रहस्यवाद प्रमुख स्थान दिया जाता है।

२ आध्यात्मिक तत्वों की प्रधानता →

आध्यात्मिक तत्वों की प्रधानता रहस्यवाद की एक प्रमुख प्रवृति है। "आत्मा की नित्यता, आत्मा और परमात्मा की अभिन्नता, जगत की नश्वरता और माया की कल्पना से सम्बद्ध बातों तत्वों के आधार पर ही रहस्यवाद का प्रासाद निर्मित होता है।

3 रहस्यवाद की जागरूकता —

रहस्यवादी अनन्त सत्ता के प्रति सतत जागरूक रहता है। अपने प्रिय से मिलने की उत्कट अभिलाषा उसे सदैव जागृत रखती है।

4. परोक्ष सत्ता के प्रति आकर्षण →

रहस्यवादी कवि की केवल भावना ही परोक्ष सत्ता के प्रति उन्मुख हो ऐसी बात नहीं है इसका तो सम्पूर्ण हृदय केवल सारी वृत्तियाँ ही इसकी ओर आकृष्ट हो जाती है। अपने आनन्द प्रियतम की अलौकिक शक्ति तथा अद्भुत सौंदर्य पर चकित एवं मुग्ध होकर रहस्यवादी कवि की आत्मा उससे मिलने की उत्कट आकांक्षा को लेकर उसकी ओर बढ़ती है।

5. आत्म समर्पण की भावना → रहस्यवाद में आत्म समर्पण की भावना को प्रमुख स्थान मिला है। रहस्यवादी कवि यह मानता है कि जब तक आत्म का पूर्ण रूपेण विसर्जन कर आत्मा अपने को प्रियतम के लिए अर्पित नहीं कर देती तब तक उसका प्रियतम के साथ मिलन सम्भव नहीं है। आत्म समर्पण की भावना के कारण ही रहस्यवादी अपने को अत्यंत ही हीन दीन समझता है। दीन हीनता की यह भावना आधुनिक कवियों में भी देखी जाती है।

उदाहरण के लिए प्रसाद की निम्न कविता।

जिसमें दैन्य भाव स्पष्ट देखने को मिलता है"
" जो तेरी हो ये क्या क्या नीहि
तो पूरी होत ही है मनोरथ
सभी ये करते पुकार करके।
यही तो आशा दिला रही है।
निराला जैसा सम्पन्न व्यक्ति भी प्रियतम
के द्वार पर पहुंचकर अत्यंत कोमलभावों
का रूप धारण कर लेता है।
" बन्द तुम्हारा द्वार
मेरे सुहाग शृंगार
द्वार यह खोलो
सुनो भी यह मेरी करुण पुकार
जरा कुछ बोलो।
महादेवी का सम्पूर्ण भाव
इन पंक्तियों में अत्यंत सुन्दर पड़ा है।
तुम गगन जल होता जितना दूर
यह समीप आता दर्शनमय
मधुर मिलन में मिट जाता है
उसकी उज्ज्वल स्मृति में धूल मिले
6 रूपकों तथा प्रतीकों की योजना ⟶
जब रहस्यवादी अपनी
अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए
सिद्ध सारी भाषा को असमर्थ पाता है तब
वह रूपकों तथा प्रतीकों की योजना करता है।
यही कारण है कि रहस्यवादी काव्य में रूपकों
और प्रतीकों का बहुत अधिक प्रयोग हुआ।
कबीर काल को मालिक का अनुमान और
शरीर को कलियों का रूप देते हुए कहते हैं ⟶
" माली आवत देखकर कलियों करी पुकार
फूले फूले चुन लिये काल्हि हमारी बार
7 मुक्तक गीत शैली ⟶
रहस्यवादी कवि अपने
भावों के प्रकाशन के लिए प्रायः मुक्तक

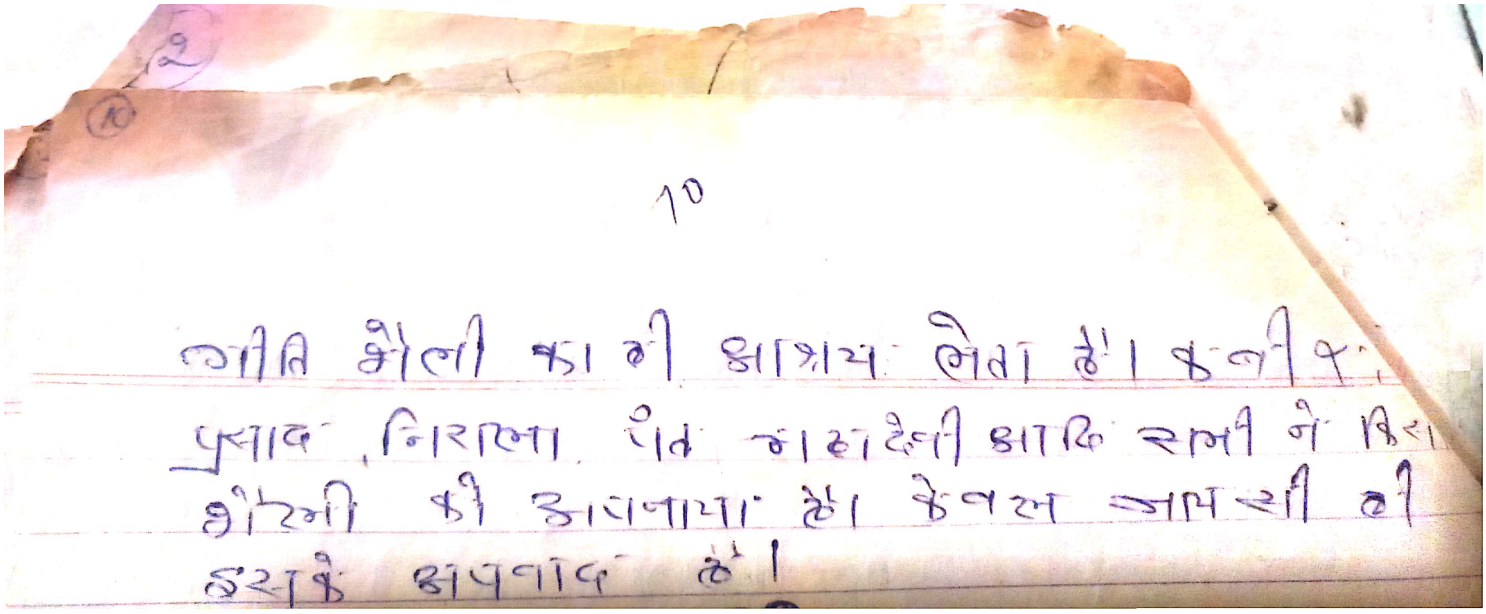

गीति शैली का भी आश्रय लेता है। कबीर, प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी आदि सभी ने इस शैली को अपनाया है। केवल जायसी ही इसके अपवाद हैं।